Office Of The sadar Majlis Ansarullah Bharat

دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph: +91-01872-220186, Fax : +91-01872-224186, Mob. +91-94170-20616, E-Mail : ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सैय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ **09.01.15** मस्जिद बैतुल फ़तूह लंदन।

अब जैसा कि व्यवस्था है, वक़्फ़-ए-जदीद के नए साल की घोषणा करता हूँ तथा पिछले साल के कुछ विवरण भी सामने रखता हूँ। वक़्फ़-ए-जदीद का सत्तावन वाँ साल अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को ग्रहण करते हुए 31 दिसम्बर को समाप्त हुआ और अटठावन वाँ साल पहली जनवरी से आरम्भ हो गया। विश्व व्यापी अहमदिय्या जमाअत को इस वर्ष अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वक़्फ़-ए-जदीद में बासठ लाख नव्वे हज़ार पौंड की क़ुरबानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली जो पिछले वर्ष की तुलना में सात लाख इकत्तीस पौंड अधिक है।

तशहहुद तअव्वुज़ और सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ؕ وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝ अतः अल्लाह का तक़वा धारण करो जिस हद तक तुम्हें तौफ़ीक़ हो और सुनो तथा आज्ञा पालन करो और ज़ार्च करो यह तुम्हारे लिए उत्तम होगा जो मन की कृपणता से बचाए जाएं तो वे लोग सफल होने वाले हैं। और यदि तुम अल्लाह को क़र्ज़-ए-हस्ना (उत्तम ऋण) दोगे तो वह उसे तुम्हारे लिए बढ़ा देगा और तुम्हें क्षमा कर देगा और अल्लाह बड़ा गुणग्राही और सहनशील है।

जैसा कि इस आयत से ज़ाहिर है, अल्लाह तआला मोमिनों को इस ओर ध्यान दिला रहा है कि तक़वा धारण करो तथा सम्पूर्ण आज्ञा पालन के द्वारा अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करो। और अल्लाह तआला के जो असंख्य आदेश हैं उनमें से एक महत्व पूर्ण आदेश अल्लाह तआला के लिए ख़र्च करना भी है। अतः मोमिन को माल की क़ुरबानी के समय कभी असमंजस से काम नहीं लेना चाहिए। क्यूंकि ये आर्थिक क़ुरबानी जो मोमिन करते हैं एक नेक उद्देश्य के लिए होती है। आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत ही वह जमाअत है जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए पवित्र उद्देश्यों की प्रगति के लिए ख़र्च करती है तथा ख़र्च करने की इच्छुक है। इसलाम का प्रचार है, मुबल्लिग़ों की तैय्यारी तथा उनको कार्य क्षेत्रों में भेजना है, लिट्रेचर का प्रकाशन है, क़ुरआन करीम का प्रकाशन है, मस्जिदों का निर्माण है, मिशन हाउसों का निर्माण है, स्कूलों की स्थापना है। रेडियो स्टेशनों का विज़िन्न देशों में उदघाटन है, जहां से दीन की शिक्षा का प्रसार होता है। हस्पतालों की स्थापना तथा अन्य मानव सेवा के कार्य हैं।

भावार्थ यह है कि इसी प्रकार के विभिन्न काम हैं जो अल्लाह और उसके बन्दों के अधिकारों से सम्बंधित हैं जो आजकल दुनिया के मान-चित्र पर वास्तविक इसलाम की शिक्षानुसार केवल अहमदिया जमाअत ही कर रही है। यह इस लिए कि हमने ज़माने के इमाम को मान कर इन कामों की गरिमा को समझा है। हम वे लोग हैं जिन्होंने कंजूसी की मानसिकता से बचते हुए उन लोगों में शामिल होने का ज्ञान प्राप्त किया है जिनकी गणना मुफ़लिहून (सफलता पाने वालों) में है वे लोग जो समृद्धि पाने वाले हैं जो सफलताएं प्राप्त करने वाले हैं अपनी नेक अभिलाषाओं को पूरा करने वाले हैं। वे लोग हैं जो रोचक जीवन को प्राप्त करने वाले हैं ऐसा रोचक जीवन जो अल्लाह तआला की प्रसन्नता के लिए हो, जिनके जीवन ख़ुदा तआला की सुरक्षा में आ जाते हैं, जिनको समृद्धि में व्यापकता प्राप्त होती है, सदैव रहती है, जो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से संतोष प्राप्त करने वाले हैं, जिन पर अल्लाह तआला की कृपा सदा प्रकट होती रहती है। इस दुनिया में भी तथा आख़िरत के जीवन में भी।

अतः जो ख़ुदा तआला की ओर से सफलताएं प्राप्त करते हैं उनकी सफलताएं सीमित नहीं होतीं बल्कि जैसा कि मैं ने बताया, इन सफलताओं का रूप असीमित है। अतः कितने भागय शाली हैं वे लोग जो इस प्रकार की कामयाबियां हासिल करने वाले हैं। तुम्हारी आर्थिक क़ुरबानियों को अल्लाह तआला ऐसे प्यार की दृष्टि से देखता है और इनको ऐसा महत्व देता है जिस प्रकार तुम ने ख़ुदा तआला को जैसे उत्तम ऋण दिया हो और जब ऋण की वापसी का समय आता है तो ख़ुदा तआला बढ़ाकर देता है और केवल यही नहीं बल्कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि तुम्हारे इस बलिदान के कारण तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और अधिक नेकियों की तौफ़ीक़ प्रदान करेगा।

अतः तुम अल्लाह तआला के द्वारा दिए गए सम्मान का अनुमान लगा ही नहीं सकते। अतः कितने भागय शाली हैं वे लोग जो अल्लाह तआला की कृपा से इस प्रकार फ़ैज़ पाते हैं और फिर अल्लाह तआला के इस प्यार के सलूक का उन पर इतना प्रभाव होता है कि वे अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बढ़े हुए माल को फिर उसी के लिए ख़र्च कर देते हैं और इस प्रकार वे अर्थिक दृष्टि कोण से भी फ़ज़्लों के प्राप्त करने वाले बनते चले जाते हैं और अन्य लाभ वे जो हैं, दूसरे फ़ैज़ जो हैं, वे भी इनको पहुंचते चले जाते हैं। ऐसी अनेक घटनाएं हैं जो बड़ी

भावनाओं के साथ अहमदी बयान करते हैं कि किस प्रकार उन पर अल्लाह तआला ने फ़ज़्ल फ़रमाया, किस प्रकार उनको बलिदानों की तौफ़ीक़ मिली और उनकी आशाओं से बढ़कर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल में वे भागीदार बने। इस प्रकार की कुछ घटनाएं मैं आपके सज़्मुख रखूंगा।

बैनिन से हमारे सिलसिले के मुबल्लिग़ ने लिखा है कि कोतोनो नगर से एक वृद्ध व्यक्ति हैं, सलमान साहब आर्थिक रूप से बड़े दुर्बल हैं। जब वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दा लेने वाले उनके घर गए और बताया कि आपके वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे, जो आपने वादा किया हुआ है, अभी शेष हैं। सलमान साहब ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक घर पर उनका स्वागत किया तथा वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे के विषय में सुनकर घर के अन्दर गए और छः हज़ार फ़रांक सैफ़ा लाकर दे दिए। उनके सामर्थ के अनुसार, ये लिखने वाले लिखते हैं, यह बहुत बड़ी रक़म थी। इस पर चन्दे लेने वालों ने उनको कहा कि निःसन्देह आप थोड़ी रक़म दें, इतनी बड़ी रक़म न दें, बच्चों के लिए भी रखें। क्यूंकि यह आपके सामर्थ्य से अधिक हैं। उन्होंने जवाब दिया कि जब ख़ुदा ने मुझे यह रक़म दी है तो मैं उसके काम में क्यूं न दूँ। यह मेरी पूंजी नहीं है बल्कि अल्लाह की धरोहर है।

फिर तंज़ानिया के हमारे मुबल्लिग़ लिखते हैं कि वहां एक रीजन के अहमद मनूपे साहब नौ-मुबाय (नए अहमदी)हैं, दो साल पहले अहमदी हुए हैं। उन्होंने बार बार इस बात का वर्णन किया है कि जब से जमाअत में शामिल हुए हैं और चन्दा देना आरज़्भ किया है तो एक प्रकार की मन की शांति मिलती है तथा हमारे आर्थिक स्थिति अत्यंत सुधर गई है। फिर बरोंडी के मुबल्लिग़ साहब लिखते हैं। वहां एक अबू-बकर साहब हैं, अत्यधिक ग़रीब नौ अहमदी हैं। तुच्छ सी आय में अपना जीवन यापन करते हैं, अपने वालिदैन की भी सहायता करते हैं तो कहते हैं- जब मैं उनके पास वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे के लिए गया तो तुरन्त कुछ अदा कर दिया और कहा कि उनके वालिद साहब के पाँव में चोट लगने कारण वे बहुत अधिक बीमार हैं। तीन महीने से हस्पताल में भी काफ़ी इलाज करा चुके हैं, देसी इलाज भी करा चुके हैं। अब डाक्टर उनका पाँव काटने की सोच रहे हैं और बताया कि जब वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे की तुच्छ सी रक़म अदा की थी, उसका यह फ़ज़्ल हुआ कि जहां मैं काम करता था मेरे मालिक ने मेरे वेतन में बढ़ोतरी कर दी और उससे बढ़कर यह फ़ज़्ल हुआ कि मेरे वालिद साहब भी ठीक होना शुरु हो गए। पहले वे सोटी के सहारे चला करते थे अब बिना सहारे कि चलना आरज़्भ कर दिया और ये सब चन्दा देने की बरकत है।

फिर तंज़ानिया कि हमारे मुबल्लिग़ सलमानी साहब, ये लिखते हैं कि मैं दुकानदार हूँ। पिछले वर्ष मेरे व्यवसाय में हानि हुई परन्तु मैं ने तहरीक-ए-जदीद एंव वक़्फ़-ए-जदीद के वादों में कमी नहीं होने दी तथा रमज़ानुल मुबारक में ही अपने वादे से बहुत अधिक अदायगी की ताकि ख़लीफ़तुल मसीह की दुआओं का भागीदार बन सकूं तथा इस हानि से निकलूं। ख़ुदा तआला ने ऐसा फ़ज़्ल किया कि उस समय मेरी एक दुकान थी और वह भी घाटे में चल रही थी। अल्लाह तआला ने मेरे चन्दे में इतनी बरकत डाली कि अब मेरी दो दुकानें हैं। तो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह रखता नहीं, कई गुना बढ़ा कर देता है।

फिर तंज़ानिया से ही एक नौ-मुबाय हैं शांगवे जुबैरी साहब, बनवारा रीजन के। कहते हैं- मैं जमाअत में शामिल हुआ था फिर जमाअत छोड़ दी। फिर मैं स्थानीय मुअल्लिम के प्रयासों से पुनः जमाअत में आया। जब मैं जमाअत के निज़ाम से बाहर था तब मरा जीवन यापन कठिनाई के साथ होता था, हर दिन घाटे में रहता था। परन्तु जब से जमाअत में शामिल हुआ हूँ थोड़े ही समय बाद मरी आर्थिक स्थिति में सुधार आ गया अल्लाह तआला ने चन्दा देने से इतनी बरकत डाली कि अब मैं अपनी पिछली स्थिति से कई गुना अच्छी हालत में हूँ।

फिर कांगू बराज़ वैल से मुबल्लिग़ साहब लिखते हैं- एक ग़रीब अहमदी दोस्त आलीपा साहब मज़दूरी करते हैं, हर माह चन्दा पूरा अदा करते हैं। जब हम ने वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे का ऐलान किया तो कहते हैं- मेरे पास केवल दो हज़ार फ़रांक सैफ़ा जो उपलब्ध थे, चन्दे में दे दिए। शाम को कहते हैं कि मुझे एक व्यक्ति ने बीस हज़ार फ़रांक सैफ़ा भिजवा दिया जो एक समय पहले मैं ने मज़दूरी की थी, लेकिन उसने मुझे अदायगी नहीं की थी। कहते हैं- मैं समझता हूँ कि चन्दे की बरकत से ख़ुदा तआला ने उसे विवश किया कि वह मुझे मेरी रक़म अदा कर दे और इस प्रकार दस गुना बढ़ाकर अल्लाह तआला ने रक़म अदा करा दी।

तो इन दूर सदूर क्षेत्रों में रहने वाले अहमदियों को भी तथा अहमदियों के बच्चों को भी अल्लाह तआला ने अत्यधिक निष्ठा प्रदान की हुई है और वे चन्दों के महत्व को समझते हैं। कौन है जो उनके दिलों में प्रेरणा उत्पन्न करता है? निःसन्देह ख़ुदा तआला के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हो सकता। फिर भी दुनिया के अन्धों को दिखाई नहीं देता कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ख़ुदा तआला की ओर से भेजे गए हैं। यह भी याद रखें कि नए आने वाले श्रद्धा एंव निष्ठा में बड़ी तेज़ी से प्रगति कर रहे हैं। नेकियों में आगे बढ़ने की रूह जो है इस ओर पुराने अहमदियों को, पूराने परिवारों को भी ध्यान देना चाहिए तथा बड़े चिंतन के साथ ध्यान देना चाहिए।

फिर हमारे कंशासा के मुबल्लिग़ साहब लिखते हैं कि वहां के अहमदी हैं, इबराहीम साहब। भेड़ बकरियों के ख़रीदने बेचने का काम करते हैं। अहमदियत में आने से पहले उनके व्यवसाय की स्थिति बड़ी दुर्बल थी और कोई लाभ नहीं होता था। अहमदियत क़बूल करने के पश्चात उन्होंने अपने सामर्थ के अनुसार चन्दा अदा करना आरज़्भ किया। चन्दे की बरकत से उनके कारोबार की दशा सुधर गई। नौ-मुबाइन में से अल्लाह के फ़ज़्ल से चन्दा देने की भावना अब उन्नति कर रही है तथा बड़ी निष्ठा पूर्वक अब चन्दा देते हैं और अल्लाह के फ़ज़्ल से अब ईमान एंव विवेक में प्रगति कर रहे हैं।

हिन्दुस्तान के कशमीर के इंस्पैक्टर साहब लिखते हैं कि पिछले दिनों कशमीर प्रदेश में जो सैलाब आया था उसके कारण श्रीनगर शहर के लगभग सभी अहमदी घर प्रभावित हुए थे। तो इंस्पैक्टर साहब कहते हैं- जब किसी भी घर जाता तो यह कहने का साहस न होता था कि

चन्दों की वसूली के लिए आया हूँ। लेकिन कहते हैं- लोग स्वंय ही मुझे देखकर चन्दे के बारे में पूछते और बड़ी प्रसन्नता पूर्वक अपने शेष चन्दे अदा कर रहे हैं और उनके चेहरों पर इतनी कठिनाई के बावजूद कोई माथे पर बल तक नहीं था। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अहमदिया जमाअत श्रीनगर का बजट पूरा हो गया।

बैनिन से हमारे मुबल्लिग़ साहब लिखते हैं- एक नौ-मुबाय निरन्तर इस नीयत के साथ चन्दा अदा करते थे कि अल्लाह तआला उनके परिवार को अहमदी बना दे। वे अहमदी हो गए थे, फ़ैज़्ली अहमदी नहीं थी। वे बयान करते हैं कि मैं ने सपने में देखा कि मेरे चन्दे देने की बरकत से सारा परविार अहमदी हो गया है। बैनिन मोगोरो गाँव की एक महिला हैं, शाबेल साहिबा। कहती हैं कि पिछले साल मेरी यह हालत थी कि मैं जो काम अथवा व्यवसाय आरज़्भ करती, घाटा होता और कोई भी काम सिरे न चढ़ता। कहती हैं- जब से मैं ने यथावत चन्दा देना आरज़्भ किया है मेरा कारोबार चलने लगा है, घर में सज़्मन्नता है।

फिर इंडिया से ही क़मरुद्दीन साहब इंस्पैक्टर कहते हैं- केरल प्रदेश में माली साल के आरज़्भ में वक़्फ़-ए-जदीद का बजट बनाने के सज़्बंध में एक जमाअत में पहुंचा, जहां एक छब्बीस वर्ष के नौजवान से भेंट हुई। उन्होंने कहा कि मैं ने इंटीरियर डिज़ाइनिंग की पढ़ाई पूरी की है तथा अपने पिता जी के साथ कारोबार करने लगा हूँ। वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे के बारे में इनको बताया तो उसी समय श्रीमान जी ने दो लाख रुपए अपना बजट लिखवाया और कहा कि अब काम आरज़्भ किया है, ख़ुदा जाने वादा कहां से पूरा होगा। इस प्रकार जब दोबारा मैं चन्दा वसूली के सज़्बंध में गया तो उन्होंने ख़शी के साथ कहा कि अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से लगभग कई बैंकों से मुझे इंटीरियर डिज़ाइनिंग का काम मिला और जिसके कारण मेरी आय में बड़ी बरकत मिली है और उसी समय उन्होंने अपना वादा जो लिखवाया था, पूर्ण रूप से अदा कर दिया। फिर इंडिया से वक़्फ़-ए-जदीद के नाज़िम माल लिखते हैं कि उत्तर प्रदेश में माल का दौरा करते हुए मुहज़्ज़द फ़रीद अनवर साहब, सैक्रेटरी माल कानपुर से भेंट हुई। उन्होंने अपने वादे वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दे की पूरी अदायगी कर दी और साथ ही शाम को अपने घर आने की दावत दी। इस प्रकार शाम को उनके घर पहुंचा तो उन्होंने बताया कि उनकी आठ साल की बेटी दो दिन से आपकी प्रतीक्षा कर रही थी। अतः सजीला चुप चाप अन्दर कमरे में गई, सजीला नाम है बच्ची का, और थोड़ी देर के पश्चात जब बाहर आई तो हाथ में उसके गुल्लक था और विनीत को देते हुए कहा कि मैं ने पूरे साल में इसमें चन्दा देने के लिए रक़म जमा की है आप इस में से सारी रक़म निकाल लें और रसीद देदें।

मैंने पहले भी कहा था यह रूह जो बच्चों में पैदा हो रही है, यह कौन कर सकता है? केवल तथा केवल ख़ुदा तआला है जो बच्चों के दिल में डालता है परन्तु वालिदैन का भी काम है कि घर के वातावरण को दीनी रखें और बच्चों में चन्दों का महत्व अन्य नेकियों के संग, इबादतों से संग, चन्दों के महत्व को भी समय समय पर उनके दिलों में डालते रहें।

तो ये हैं आर्थिक बलिदानों की कुछ घटनाएं कि किस प्रकार तड़प के साथ ये लोग चन्दों की अदायगी करते हैं। अनेक घटनाओं में से यह भी है कि हमने देखा है कि किस प्रकार ख़ुदा तआला बढ़ा कर लौटाता ज़ी है। अतः ख़ुदा तआला सच्चे वादों वाला है। जहां ख़ुदा तआला के कलाम की सत्यता प्रकट होती है, इन घटनाओं को देखकर तथा हमें स्वंय भी अनुभव होता है वहीं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत के साथ, चाहे वह दुनिया के किसी भी देश में हो, अल्लाह तआला के समर्थन के दृश्य भी नज़र आते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से इस समय थोड़ा सा आपको अनुभव बताना चाहता हूँ कि अफ़्रीका के 18 देशों में 95 मस्जिदों का निर्माण हो रहा है तथा कई बड़ी बड़ी मस्जिदें ज़ी बन रही हैं क्यूंकि वहां संज़्या ज़ी बढ़ रही है तथा तबलीग़ के नए मैदान भी खुल रहे हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी इस ओर विशेष ध्यान दिलाया है कि जहां इसलाम का परिचय कराना हो, तबलीग़ करनी हो तो मस्जिद बना दो। अफ़्रीका के अतिरिक्त भी विश्व में ये काम हो रहे हैं। इस समय अफ़्रीका सहित लगभग पच्चीस देश हैं, सात अन्य देश भी हैं जहां इस साल में 204 नई मस्जिदें निर्मित हुई हैं। इसी प्रकार 184 मिशन हाउसिज़ निर्मित हुए हैं। योरोपा तथा पश्चिमी देशों के वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दों का लगभग 80 प्रतिशत अफ़्रीका के देशों में ख़र्च होता है। जैसा कि विवरण में भी बयान हुआ है किस प्रकार वे क़ुरबानियां कर रहे हैं परन्तु विरोधी नई बैअत करने वालों को विभिन्न दबाव डाल कर दूर हटाने का प्रयास करते हैं। दुर्बल लोग भी होते हैं जो पीछे हट जाते हैं परन्तु अनेक लोग ईमानों में ऐसी दृढ़ता वाले भी हैं जो किसी बात की परवाह नहीं करते।

अतः उनका इस ओर ध्यान दिलाने के लिए जमाअतों को मैं ने यही कहा था कि बैअतें कराने के बाद निरन्तर सज़्र्क रखें और सदैव सज़्र्कों को दृढ़ करते चले जाएं। वहां बार बार जाएं ताकि तरबीयती पहलू भी सामने आते रहें तथा तरबीयत भी होती रहे। तो इन देशों की जमाअतों को इस बात की व्यवस्था करनी चाहिए कि कम से कम आरज़्भ में एक साल तक विशेष रूप से बड़ा ध्यान दें। इस प्रकार अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से लाखों की संज़्या में नए सज़्र्क हुए तथा वे लोग वापस आए और अब तरबीयत के लिए सक्रिय व्यवस्था आरज़्भ है। इसमें और अधिक व्यापकता की आवश्यकता है। इसी प्रकार हिन्दुस्तान में सज़्र्क हैं, पश्चिमी बंगाल में, कहते हैं बैअतें हुई थीं तो वहां तलाश करने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से आर्थिक बलिदान करने वालों की संज़्या में हर वर्ष बढ़ोतरी तो होती है, परन्तु जितना होना चाहिए उतना नहीं है। उदाहरणत्य इस साल वक़्फ़-ए-जदीद में 85 हज़ार की बढ़ोतरी हुई है और अलहमदु लिल्लाह यह जमाअत के विकास का स्तर है।

अतः विकास निःसन्देह अल्लाह तआला की कृपा से है, हो रही है परन्तु इसमें अभी और अवसर है। आने वाले वर्ष में लोगों को शामिल करने का टारगैट नए सिरे से जमाअतों को वकालत-ए-माल के द्वारा मिलेगा। इस ओर पूरा ध्यान दें। हमें क़ुरबानियों की रूह पैदा करने वाले

अपने अन्दर अधिक से अधिक चाहिएं और इसको बढ़ाने की आवश्यकता है। इसके लिए ओहदेदार दुआ भी करें और प्रयास भी करें तथा अन्य सामान्य अहमदी भी सज़र्कों का काम जारी रखें। जो नेक प्रकृति के हैं और जिनको ख़ुदा तआला बचाना चाहता है वे इन्शाअल्लाह तआला वापस आएंगे।

अतः नौ-मुबाय लागों को तथा पुराने अहमदियों के विषय में भी इस प्रकार की घटनाएं होती हैं जो आर्थिक बलिदान के स्तर बढ़ने के कारण उनकी श्रद्धा का पता देती हैं। उनकी निष्ठा के स्तर का पता चलता है। परन्तु जमाअत के निज़ाम को, प्रथक होने वालों का भी पता लगाने का भरसक प्रयास करना चाहिए। हिन्दुस्तान में भी जैसा कि मैं ने कहा, बंगाल में बैअतें हुई थीं, निरीक्षण करने करने के लिए प्रोग्राम बनाने चाहिएं ताकि सज़र्कों के टूटने अथवा पीछे हटने वालों के कारणों का पता चले तथा आगे के लिए इन कमियों को सामने रखते हुए फिर तबलीग़ और तरबीयत का व्यापक प्रबन्ध हो। इसी प्रकार शेष विश्व में ज़ी इसी प्रकार काम करना चाहिए कि जो जमाअत में शामिल होता है उसके साथ किस प्रकार निरन्तर सज़र्क रखें चाहे वह कितना ही दूर के क्षेत्र में रहता हो, सज़र्क अति आवश्यक है। अल्लाह तआला जमाअत को इस काम के करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

अब मैं, जैसा कि व्यवस्था है, वक़्फ़-ए-जदीद के नए साल की घोषणा करता हूँ तथा पिछले साल के कुछ विवरण भी सामने रखता हूँ। वक़्फ़-ए-जदीद का सत्तावन वाँ साल अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को ग्रहण करते हुए 31 दिसज़्बर को समाप्त हुआ और अटठावन वाँ साल पहली जनवरी से आरज़्भ हो गया। विश्व व्यापी अहमदिय्या जमाअत को इस वर्ष अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वक़्फ़-ए-जदीद में बासठ लाख नव्वे हज़ार पौंड की क़ुरबानी पेश करने की तौफ़ीक़ मिली जो पिछले वर्ष की तुलना में सात लाख इकत्तीस पौंड अधिक है। अलहमदु लिल्लाह

पाकिस्तान सर्व प्रथम ही है, पिछले साल बर्तानिया ऊपर आया था। इसके बाद बर्तानिया फिर अमरीका फिर जर्मनी फिर कैनेडा फिर हिन्दुस्तान फिर आस्ट्रेलिया। आस्ट्रेलिया में ज़ी माशाअल्लाह संज़्या बढ़ाने की दृष्टि से भी तथा वसूली की दृष्टि से भी बड़ा काम हुआ है। आस्ट्रेलिया के बाद इंडोनेशिया है फिर दुबई, बैल्जियम और फिर एक अन्य अरब देश। (इसके पश्चात हुज़ूर अनवर ने वक़्फ़-ए-जदीद के चन्दों की अदायगी के क्रमानुसार देशों की तुलना पेश करते हुए सक्रिय जमाअतों का वर्णन किया)

वसूली के अनुसार भारत के प्रदेश जो हैं, केरला नज़्बर एक पर है। जज़्मू कशमीर, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश, वैस्ट बंगाल, उड़ीसा, कर्नाटक, क़ादियन पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, लक्ष्दीप और राजिस्थान। भारत की जमाअतें वसूली की दृष्टि से इस प्रकार हैं- करुलाई, कालीकट, हैदारबाद, कोलकाता, क़ादियान, कुनूर टाउन, सूलूर, पयंगाड़ी, चैन्नई, बंगलोर। अन्त में तीन जमाअतें हैं- करुनागा पल्ली, पित्था पीरियम और केरंग।

अल्लाह तआला क़रबानी करने वालों के जान और माल में अत्यधिक बरकत डाले। अन्त में इस दुआ की ओर भी ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि पाकिस्तान के अहमदियों के लिए विशेष रूप से दुआ करें। रबवा में भी कुछ दिनों से विरोधियों तथा द्वेष रखने वालों की ओर से हालात ख़राब करने का काफ़ी प्रयास किया जा रहा है। अल्लाह तआला उनके द्वेष से हर अहमदी को बचाए तथा उनके द्वेष उन्हीं पर उलटाए और रबवा में शांति बनी रहे। प्रशासन तथा सरकार को भी अल्लाह तआला बुद्धि प्रदान करे कि वे उचित ढ़ंग से इस परस्थिति को संभाल सकें।

इसी प्रकार मुस्लिम दुनिया तथा योरुप में रहने वाले मुसलमानों के लिए भी दुआ करें। फ्रांस में जो एक अत्याचारी घटना हुई है, इसलाम और आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के नाम पर। इसके परिणाम स्वरूप मुसलमानों को भी जो योरपियन देशों में रहते हैं अथवा पश्चिम में रहते हैं, उन देशों के स्थानीय लोगों के दुर्व्यवहार का सामना हो सकता है और केवल यही नहीं कि इसकी प्रतिक्रिया में यह अख़बार भी और यहां के लोग भी और यहां का प्रेस भी अनुचित प्रतिक्रिया दिखाकर आँहज़रत सलल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात पर अनुचित हमला कर सकते हैं और इस प्रकार उपद्रव का क्रम बढ़ता चला जाएगा, इसके बढ़ने की सज़्भावना है। आज जमाअत के लोगों का यही काम है कि दोनों ओर के लोगों को अत्याचारों से बचाने के लिए दुआ करें। इसी प्रकार दरूद शरीफ़ इन दिनों में अधिकता से पढ़ने की ओर ध्यान दें और जो अपनी सीमा में शांति के लिए प्रयास भी कर सकते हों उनको भी प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला दुनिया को उपद्रव की स्थिति से मुक्ति प्रदान करे और यह फ़साद की स्थिति जो है जल्दी शांति में बदल जाए।

Khulasa Khutba-e-Juma, Huzoor-e-Anwar Ayyadahullhu Ta'la 09.01.2015

BOOK-POST (PRINTED MATTER)

TO,.....

.....

From; *Office Ansarullah Bharat, Aiwan-e-Ansar, Moh; Ahmadiyya,Qadian-143516Via; Batala, Dist; Gurdaspur (Pb)*

Toll Free Shoba Noor-ul-Islam: 1800-3010-2131